Vishal Bhardwaj

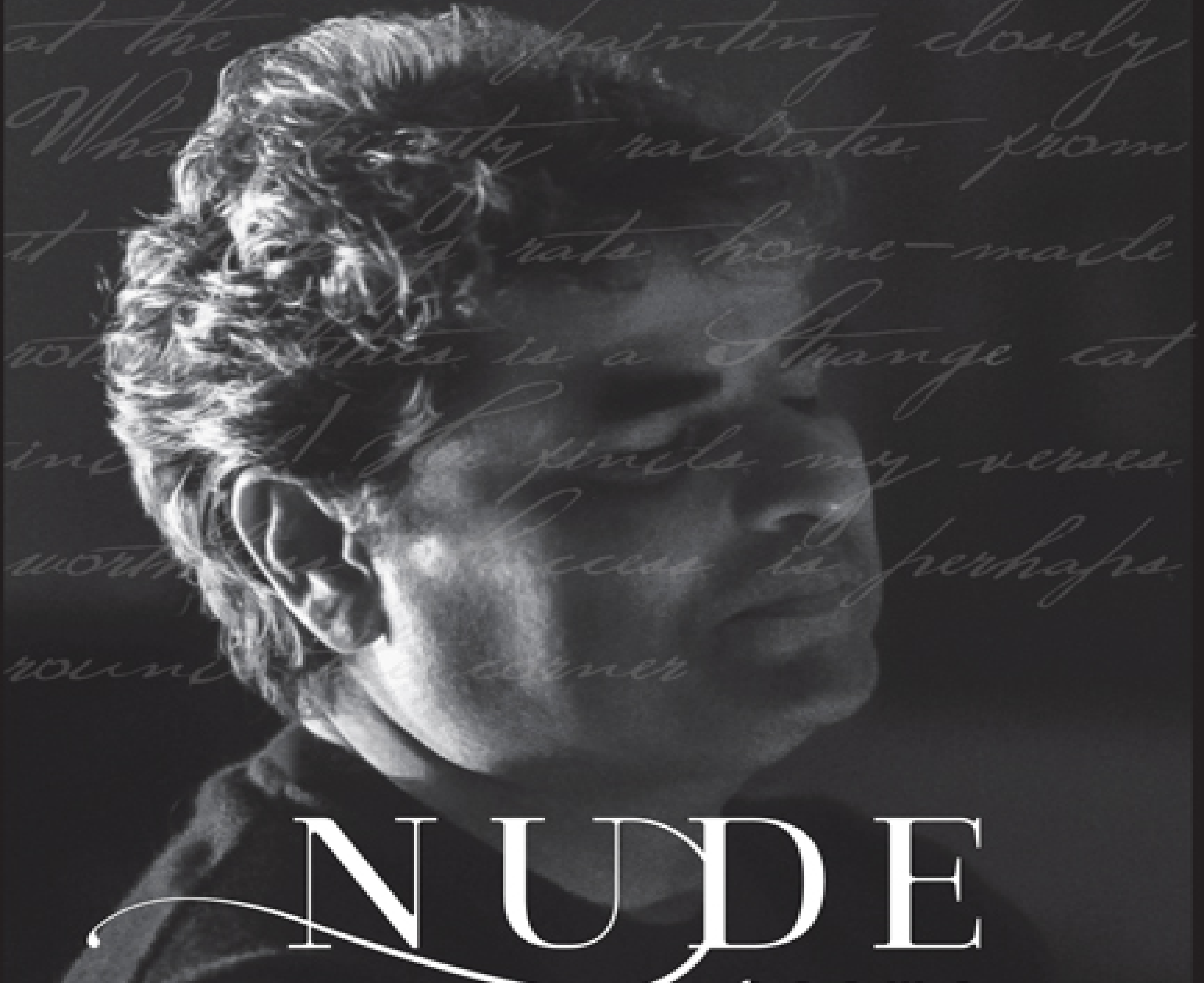

NUDE

poems

Translated by SUKRITA PAUL KUMAR   Foreword by GULZAR

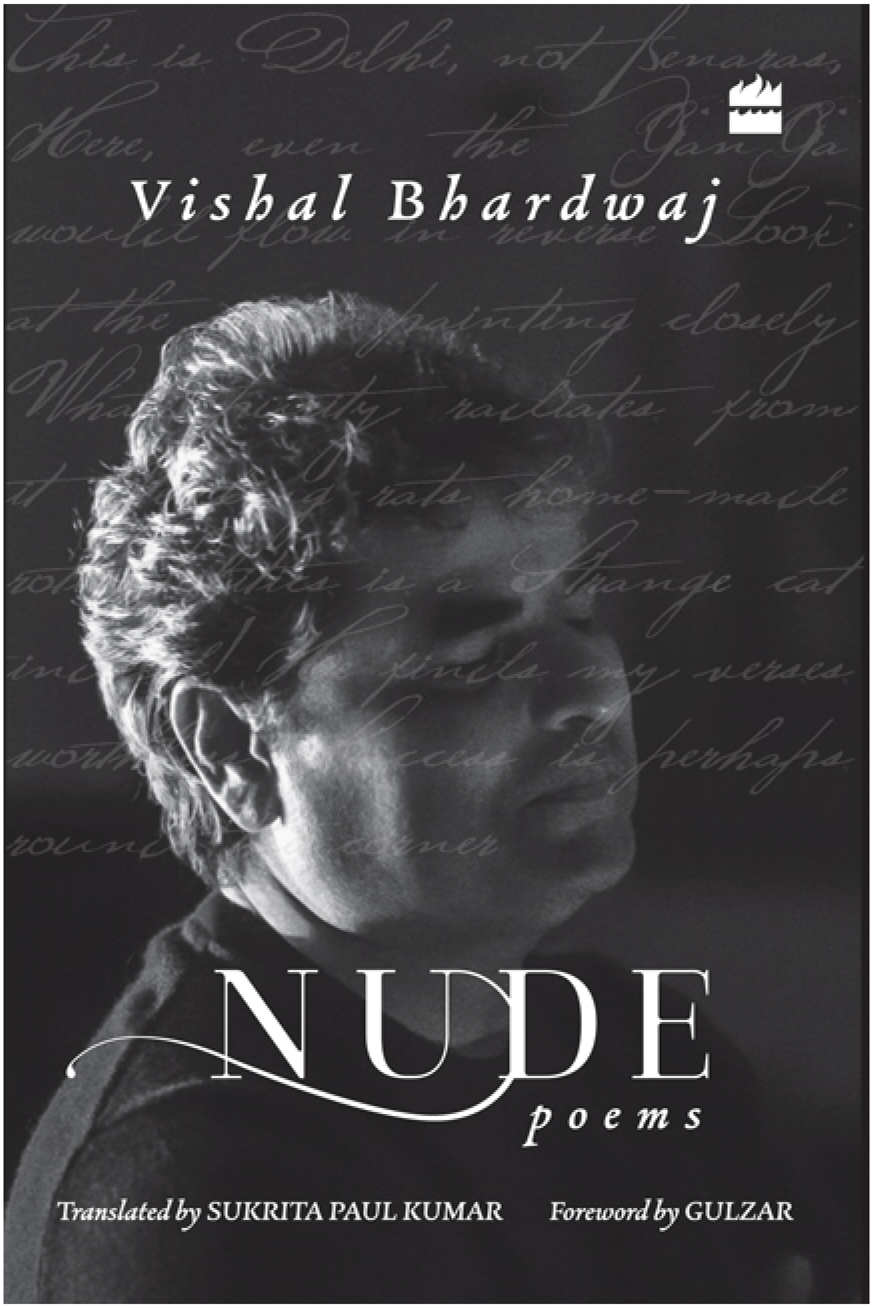
Vishal Bhardwaj
NUDE
poems
Translated by SUKRITA PAUL KUMAR
Foreword by GULZAR

NUDE

Poems

Vishal Bhardwaj

Translated by
Sukrita Paul Kumar

HarperCollins *Publishers* India

मेरी ज़िन्दगी के ऊला और सानी मिसरे...
रेखा और आसमान के लिए

Contents

Foreword

भूमिका

Translator's Note

Ghazalein

Nazms

Acknowledgements

About the Book

About the Author

Copyright

FOREWORD

Gulzar

विशाल की creative शख़्सियत को इतना ज़्यादा जानता हूँ कि उसके लिये मुख़्तसर बात कहना मेरे लिये मुश्किल हो गया है। वो मौसीक़ार भी है, फ़िल्म-मेकर भी, शाइर भी और कई mediums में अपनी बात का इज़्हार करता है।

अजीब एक पेड़ है, जिस पर कई तरह के फल लगते हैं, और सब उसके मिज़ाज से पैदा होते हैं।

मैं कोशिश कर रहा हूँ कि इस बार उसे शाइर ही की तरह देखूं... ये उसकी शाइरी का पहला मजमुआ है। कोशिश है कि उसकी शाइराना तबीयत, शाइराना मिज़ाज का ज़िक्र कम कर के, उसकी शायरी की बात करूं।

वो 'डॉक्टर बशीर बद्र' की शाइरी पर पला हुआ शाइर है। इस लिये नई नई तशबीहें और इसत्यारे उसके मिज़ाज में आसानी से दाख़िल हो जाते हैं। उसके शेरों में वो पिघल कर उतर आते हैं। 'विशाल' को कोई कोशिश नहीं करनी पड़ती। एक शेर सुनाऊं?... शायद ये शेर 'डॉक्टर बशीर बद्र' की याद दिलाये, लेकिन उस पर 'विशाल' का इज़ाफ़ा देखिये के उस्ताद ने बेल लगाई थी, 'विशाल' उसे मुन्डेर पे ले गया।

'ज़र्द पुलोवर, शॉल फ़िरोज़ी, कोट हरा, व्हाईट मफ़लर
तेरे सब कपड़ों की ख़ुशबू मेरे बदन में ठहर गई
...
दिन का भारी ट्रक तो मेरे सीने से होकर गुज़रा
शब की ख़ामोशी भी आख़िर कुचल के मुझको गुज़र गई।'

'विशाल' की दियान्तदारी की दाद देनी पड़ती है। जो काम करता है वो दियान्तदारी से सीखता है और करता है। उसने 'अरूज़' भी सीख लिये, जो मैं कभी न कर सका। इसलिये उसका शेर 'बह्र' से, यानी वज़्न से थिरक नहीं सकता।

ग़ज़ल इस बात की कसौटी है। उसने कई बह्रों में ग़ज़लें कहीं। और मुझे ये कहते कोई शर्म नहीं आती के कई बार अपने शेर का वज़न उससे पूछता हूँ कि परख दे। 'विशाल' की एक ख़ूबी ये भी है के मौज़ूआत की कमी नहीं। निजी कैफ़ियत से लेकर सियासी और समाजी हालात पर भी टिप्पणी करता है। ये देखिये—

'ये बनारस नहीं है, दिल्ली है
उल्टी गंगा यहां पे बहती है
...
घर की रोटी खिलाए चूहों को
ये सियासत अजीब बिल्ली है!'

'ग़ालिब' अगर कहते हैं...

'महरबाँ हो के बुलालो मुझे चाहो जिस वक़्त
मैं गया वक़्त नहीं हूँ कि फिर आ भी न सकूं!'

इस निजी कैफ़ियत से 'विशाल' भी गुज़रे हैं।

'मैं पलट आऊंगा दे सदा वक़्त है
मोड़ पर तेरी ख़ातिर रुका वक़्त है!'

फिर नज़्में भी कहीं...
पहली नज़्म ही एक पुकार है।

'मैं ही था वो मैं ही हूँ
...
दरिया हूँ दरख़्त भी
...
दैर हूँ हरम भी हूँ
सुन्नी हूँ, शिया भी हूँ ...'

पुरी नहीं सुनाऊंगा। किताब खोल के पढ़िये।

ये नज़्म आज के दौर में कितनी बड़ी इन्सानियत की पुकार है। मेरी सारी नेक ख़्वाहिशात उसकी शायरी के लिये। सिर्फ़ एक ही डर हैः कहीं गाने न लिखने लगे!

गुलज़ार

भूमिका

विशाल भारद्वाज

आधा आधा सा लगता है मुझे। लगता है कि ज़िन्दगी में अगर सिर्फ़ एक ही विधा पे काम करता तो शायद बेहतर होता । न पूरा musician हुआ न writer और न ही director। और अब आधी शाइरी लेकर हाज़िर हूँ।

हालाँकि poetry मुझे विरासत में मिली है। मेरे पिता राम
भारद्वाज कवि थे और बहुत अच्छे कवि, मगर मेरा रुझान हमेशा कविता से ज़ियादा ग़ज़ल और नज़्म की तरफ़ रहा।

डॉ. बशीर बद्र और गुलज़ार साहब की ग़ज़लों और नज़्मों के बीच मेरी परवरिश हुई। एक वक़्त था कि मुझे दोनो की पूरी शाइरी ज़बानी याद थी।

कहता तो काफ़ी वक़्त से रहा पर कभी ऐसा लगा नहीं कि जो कहा है वो छपवाने के लायक है। दो वज्ह थीं, और सच कहूँ तो वज्ह भी नहीं कमियाँ थीं। एक, कि मेरी नज़्में गुलज़ार साब की pirated copy लगती थीं और दूसरी, मेरी ग़ज़लें बह्र से ख़ारिज थीं। शाइरी को लेकर मैं serious नहीं था तो बह्र का क़ायदा – अरूज़ सीखने की कभी कोशिश ही नहीं की पर जब गुलज़ार साहब ने किताब छपवाने का हुक्म और ultimatum दोनों एक साथ सुना दिए तो मैं अरूज़ सीखने के लिए छटपटाने लगा। और मेरी खोज मुझे उन दो लोगों तक ले गयी जिनका शुक्रिया अदा करने की इससे बेहतर और कोई जगह नहीं है। जनाब अम्बर खरबंदा साहब, जिन्होंने जादू की छड़ी से दो दिन में तक़्तीअ करना सिखा दिया और मेरे गुरु भाई- जनाब अशोक ‘मिज़ाज’ बद्र साहब जिन्होंने महीनों, जम कर क़ायदों का रियाज़ कराया और इस्लाह की।

दूसरी कमी तो ठीक हो गयी और पहली ठीक करने की मैंने कोशिश भी नहीं की। गुलज़ार साहब की ज़बान में – रेखा की शक्ल भी तो आसमान पे ही गई है।

मैं ओशो का आशिक़ हूँ, he is my master। मैं दिन रात उनके discourses सुना करता हूँ। इसीलिए कई अशआर के subjects में उनकी बोली बातें सुनायी देंगी।

ज़िन्दगी का शुक्रगुज़ार हूँ जिसने मुझे डॉ. बशीर बद्र साब के लॉन से उठाया तो उस दरख़्त के साये में बिठाया जिसका नाम गुलज़ार है।

TRANSLATOR'S NOTE

Sukrita Paul Kumar

When it comes to his poetry, feeling the intensity of love in its denial is Vishal Bhardwaj's forte. He comes across as a deeply romantic poet – 'a spy in his own heart' – exploring the possibilities of realizing love in his poems. In a sense, he seeks to experience the positive in its contrariness. While promises are sought and made, their value can perhaps be felt more if they are not kept! The poet revels in yearning. Many of the poems in this volume pulsate with some 'seeking'. There is in them an unusual imagery, evocative style and an idiom that is contemporary and yet reminiscent of the old-world charm of both the Hindi as well as the Urdu poetic traditions. Lines abound offering examples of how contradictions can be reconciled simply and ingeniously. They flourish in Vishal's poems and add a reflective dimension to them.

Vishal's request to translate his poems was very timely and providential. His ghazals and nazms came like melodies to lift my spirits just when I had broken my leg and was completely immobilized. The dismal prospect of a long and fallow period ahead – that of healing – filled up at once with imaginative expeditions into the world of Vishal's poems. I was nowhere close to my own muse to write poems around this time. Thankfully, this external stimulus to engage with poetry came my way and I fervently began the process of translation with almost an instinctive owning of the poems. I can say with absolute conviction that I responded to these poems not as a critic to evaluate them, nor as a teacher to interpret or explain them but as a reader, in a natural way. The process of translation followed without any deliberation. Yes, indeed, the calling was that each poem be born in a different linguistic locale while preserving its identity as a poem. Losses in translating poetry are inevitable. I hope there are some gains too in their recreation.

Indeed, there were challenges, ones that always come up while translating from an Indian language into English. Transferring images or delicate shades of meaning of some words or even culture-specific humour or irony from one language into another is arduous and sometimes impossible. I am aware that linguistic encounters in translation can be fatal, they can kill poetry or then, create completely new poems, eroding the value of fidelity. Here, I have tried to negotiate between two languages to create the poems anew and yet keep an eye on faithfulness to the original expression and spirit. I wish to heartily thank the editor, Shantanu Ray Chaudhuri, for lending a third eye and offering many useful suggestions. However, I take the responsibility for any lapses and perhaps some awkwardness that may have entered the Queen's English in this translation. But then, don't we need to pool into the postcolonial project of creating our own brand of English?

Ghazalein

ग़ज़लें

1

मैं अपने से काले कोसों दूर हुआ,
सारी दुनिया में लेकिन मशहूर हुआ।

मौसम शर्त लगाकर हार गया मुझसे,
बादल बारिश करने को मजबूर हुआ।

इंजन की सीटी पे पंछी चौंक पड़े,
जंगल का सन्नाटा चकनाचूर हुआ।

1

I drifted infinite miles away from myself
But became famous all over the world

The weather laid a bet and lost it
The cloud was compelled to rain

The train's whistle startled the birds
Shattering the silence of the forest

2

ये बनारस नहीं है, दिल्ली है,
उलटी गंगा यहाँ पे बहती है।

ग़ौर से देखो nude painting को,
कितनी पाकीज़गी झलकती है।

घर की रोटी खिलाए चूहों को,
ये सियासत अजीब बिल्ली है।

शेर सारे लगे ख़राब उसे,
अब तो नज़दीक कामयाबी है।

रुह से जिस्म को उतारो तो,
बुद्ध के ध्यान जैसी हलकी है।

This is Delhi, not Benaras,
Here, even the Ganga would flow in reverse

Look at the nude painting closely
What purity radiates from it

Feeding rats home-made roti
Politics is a strange cat indeed!

He finds my verses worthless
Success is perhaps round the corner

Stripped of the body, the soul
Is light like the Buddha in meditation

3

किसलिए उदास हूँ, कुछ भी तो सबब नहीं,
आपसे भी मिलने की, अब कोई तलब नहीं।

जिसमें दिल दुखे नहीं, जिसमें आँख नम न हो,
ऐसा कोई दिन नहीं, ऐसी कोई शब नहीं।

आँख का लिहाज़ था, या कि हौसला न था,
उसने text में लिखा, कह सके जो लब नहीं।

3

I am sad for no reason, no cause whatsoever
Not even a yearning to meet you now

There's neither a day nor night when
The heart does not ache, eyes are not moist

Out of respect or for want of courage
He texted what the lips could not utter

4

आँखों में दिल के मन्सूबे नंगे हैं,
सब अपने कपड़ों के नीचे नंगे हैं।

पाँच सितारा होटल के चौराहे पर,
कितने सारे बच्चे भूखे-नंगे हैं।

चिथड़ों में छुपते अधनंगों से बढ़कर,
हम कपड़ों में छुपने वाले नंगे हैं।

सच्चाई दिखलाते हैं वो परदे पर,
सब कहते हैं फ़िल्मों वाले नंगें हैं।

Naked are the heart's motives in the eyes
Naked are we all beneath our clothes

At the crossing of the five-star hotel
Many children starving and naked

More than the semi-naked hiding in rags,
We are naked, fully clothed

Presenting the truth on the screen
Film-wallahs are naked, say all

5

ये ज़मीं क्यूँ है आसमाँ क्यूँ है?
तू नहीं है तो ये जहाँ क्यूँ है?

दिल में रिश्ता कोई बुझा होगा,
मेरी आँखों में ये धुआँ क्यूँ है?

चाहता हूँ, वो कह नहीं सकता,
फिर मेरे मुँह में ये ज़बाँ क्यूँ है?

Why this earth, why the sky
Without you, why this world

Doused in the heart might be a relationship
Why this smoke in my eyes?

When I cannot say what I want to
Why this tongue in my mouth?

6

उसका ही अँधियारा था और उसका ही उजियारा है,
अपना आँगन छोड़ो तो सारा आकाश तुम्हारा है।

जब तू पास हमारे था तब भी तू इतना पास न था,
तुझसे बिछड़ के हमने हर पल तेरे साथ गुज़ारा है।

याद तुझे करने की ख़ातिर हमने ये भी काम किया,
अनजानों को अक्सर लेके तेरा नाम पुकारा है।

Darkness was his, light is his too
When you leave home, the sky is yours

Even while near me, you were not so close
When away, I spend every moment with you

Just to remember you, I often end up
Calling strangers by your name

7

ज़मीं उनींदी सी थी आसमान सोया था,
मेरी हथेली पे जब उसने चाँद बोया था।

तलाश करता हूँ ख़ुद को, मगर नहीं मिलता,
मैं अपने में ही कहीं दूर जा के खोया था।

घना दरख़्त कोई उग रहा था सीने पे,
मैं जँगलों की तिलिस्मी तहों में सोया था।

वो पेड़ घर की जड़ें चूसने लगा है, जिसे,
बड़ी उमीद से कुछ साल पहले बोया था।

7

The earth was sleepy, the sky asleep
When she planted the moon on my palm

Indeed, I search for myself in vain
Having lost myself within me

A dense tree kept growing on my chest
As I slept in the magical folds of the jungles

The tree sown with great hopes a few years ago
Now gnaws away at the very roots of the house

8

मैं पलट आऊँगा दे सदा वक़्त है,
मोड़ पर तेरी ख़ातिर रूका वक़्त है।

वक़्त है जैसे आकाश चलता हुआ,
और आकाश ठहरा हुआ वक़्त है।

दिन में इक चाँद सा शब में सूरज लगे,
दिल में धड़के तेरे देश का वक़्त है।

जो खड़ा कटघरे में है मुंसिफ़ वही,
क्या सज़ा ख़ुद को देगा, बुरा वक़्त है।

पहले मुझको ज़रूरत थी, अब है तुझे,
वो तेरा वक़्त था ये मेरा वक़्त है।

Call me, I shall return, there's time
Time lingers at the corner for you,

Time is like the sky on the move
And the sky is Time paused

Moon in the day, at night like the sun
In the heart throbs the time of your land

The accused is also the judge
How will he punish himself, bad are the times

I needed you once, now you do
That was your time, this is mine

9

हम कितने मज़बूत मकाँ में रहते हैं,
लेकिन अंदर कच्चे घर सा ढहते हैं।

हम दोनों दो साहिल एक समंदर के,
जैसे इक घर में दो तनहा रहते हैं।

भीड़ ने जिसको ज़िंदा भून दिया उसके,
घर में गाय का माँस था ऐसा कहते हैं।

हारी हैं जाने कितनी जीती बाज़ी,
हम अक्सर जज़्बात की रौ में बहते हैं।

Sturdy are the houses we live in
While crumbling inside like mud homes

We are two shores of the ocean
In the same house, each living alone

The crowd roasted him alive
His house had cow's meat, they say

Many a winning bet have we lost
Often swept away by the tide of emotions

10

तू लौट के न आएगा ये ऐतबार है,
फिर क्यूँ हमारे दिल को तेरा इंतज़ार है।

अच्छा हुआ कि भूल गए वादा करके तुम,
मग़रूर मैं बहुत था कि दिल को क़रार है।

दुख तो मुझे भी होता है कह के, मैं क्या करूँ,
ये दर्द बेचना ही मेरा रोज़गार है।

That you will not return, I'm sure
Why then does my heart wait for you

Good that you have forgotten your promise
Arrogant was I with my heart at peace

I do feel sad writing this, but what can I do
Selling pain is my profession

11

रिश्ता जो दरमियान था वो टूटने लगा,
सूरज भरी दुपहरी में ही डूबने लगा।

उसको उदास देखकर ऐसा लगा मुझे,
इक पेड़ जैसे बारिशों में सूखने लगा।

वो बात करते-करते ही ख़ामोश हो गया,
मुझको लगा कि network टूटने लगा।

The bond between us collapses
The sun begins to set at noon

Seeing him sad reminds me
Of a tree drying in the rains

He fell silent all at once
The network was breaking, I felt

12

उसकी ख़ातिर कोई नहीं फिर अनजाना,
जिसने अपना चेहरा ठीक से पहचाना।

इतना धीमे धीमे वक़्त गुज़रता है,
कोई अहमक जैसे सुनाए अफ़साना।

आने वाले हो तो एक गुज़ारिश है,
जल्दी वापस जाना हो तो मत आना।

No one is a stranger for him
Who knows his own face well

So slowly does time drag
Like a tale told by an idiot

If you are to come, here's a request
Do not bother if you have to leave soon

13

आँखों में जो तेरे मछली सी लड़की,
काँधे पे आ बैठे तितली सी लड़की।

इक चुप्पी सी छोड़ गई मेरे अंदर,
वो बातूनी झल्ली-झल्ली सी लड़की।

दिन भर घर में झरने जैसी बहती है,
शब भर जलने वाली पिघली सी लड़की।

13

Swimming in the eyes is a fish-like girl
Comes resting on the shoulder butterfly girl

Leaves behind a silence inside me
That chatty, somewhat crazy little girl

All day she cascades like a waterfall at home
Burning all night, she melts – that girl

14

ठहरे-ठहरे हुए से सफ़र में रहे,
दिल में उतरे नहीं हम नज़र में रहे।

शाम सिमटी पिघलने लगी लैंप में,
हम उदासी लिए, अपने घर में रहे।

पासबाँ की कहानी कहीं भी न थी,
लूटने वाले सारे ख़बर में रहे।

मेज़ से उसकी फोटो हटाओ नहीं,
वो किसी राब्ते से तो घर में रहे।

The halted journey continues
Stranded in the eye, never reached the heart

The evening folded and melted in the lamp
Laden with sadness I remained at home

No one heard the story of the guard
The ones who robbed remained in the news

Don’t remove her photograph from the table
Let her remain in the house somehow

15

ख़ूबसूरत मेरे वतन के लोग,
ये खुले ज़ख़्म जैसे रिसते लोग।

दे रहे हैं फ़रेब सदियों से,
सच्चे लगते हैं कितने झूठे लोग।

दफ़्न अपने बदन की क़ब्रों में,
घर से दफ़्तर को आते-जाते लोग।

Beautiful are the people of my land
They ooze like open wounds

For centuries have they been deceitful
How truthful the liars look

Buried in the graves of their bodies
Forever moving between homes and offices

16

दर्द कोई दिल से लगवा,
आशिक़ है तो घर लुटवा।

अब ज़िन्दा रहना है तो,
माथे पे सतिया गुदवा।

रहना हो सिंहासन पे,
मंदिर या मस्जिद गिरवा।

गर मैं कह दूँ मन की बात,
तुमको मारेगा लकवा।

Inflict some pain on your heart
If a lover, get your home robbed

If you want to live today
Tattoo the Swastika on your forehead

To hold on to the throne
Bring down a masjid or a mandir

Were I to reveal what's in my heart
Paralysis will strike you

17

जब आँगन से धीरे-धीरे धूप की चादर उतर गई,
गहरी-गहरी दिल की उदासी दीवारों पे बिखर गई।

ज़र्द पुलोवर, शॉल फ़िरोज़ी, कोट हरा, व्हाईट मफ़लर,
तेरे सब कपड़ों की ख़ुश्बू मेरे बदन में ठहर गई।

रिक्शा वाले के पैरों की देख के उधड़ी-उधड़ी खाल,
मेरे तलुओं में मोजों की गर्माहट भी सिहर गई।

दिन का भारी ट्रक तो मेरे सीने से होकर गुज़रा,
शब की ख़ामोशी भी आख़िर कुचल के मुझको गुज़र गई।

17

Slowly as the sheet of sunlight withdrew from the courtyard
The heart's ineffable sadness scattered over the walls

Red pullover, turquoise shawl, green coat and white muffler
Wrapped in my body is the scent of your warm clothes

The tattered, torn feet of the rickshaw-wallah
The warmth of my socks drives a chill into my soles

The day's loaded truck has already passed over my heart
The silence of the night too crushed me as it went by

18

है उदासी बहुत घर से बाहर चलें,
अजनबी चेहरों में उसको ढूँढा करें।

अपनी आँखों से चश़्मा उतारो ज़रा,
हम भी देखें तो झीलों की गहरी तहें।

तुम भी ऊबे हो महफ़िल में मेरी तरह,
आओ ऊँगली पकड़ कर उफ़क़ तक चलें।

अब तो बाहर चलें साँस लें कम से कम,
ग़म को दिल में लिए घर में कब तक घुटें।

ढूँढें ऐसा पता जो न मौजूद हो,
जिनमें खो जाएें उन रास्तों पे चलें।

Heavy is this sadness, let's step out of the house
Let's look for her in the faces of strangers

Just take the glasses off your eyes
Let me too see the depths of the lake

Weary are you of this mehfil, like I am
Come, let's walk hand in hand to the horizon

Let's go out now, if only to breathe
How long do we let this grief stifle us inside?

Look for an address that does not exist
Walk on paths on which we can lose our way

19

हर धड़कन हर साँस पे पहरा रखता है,
दिल में इक जासूस है पीछा करता है।

क़ुर्बानी मासूम की होती है अक्सर,
वो मुझको इतिहास दिखा कर कहता है।

दिन भर तो एहसास नहीं होता लेकिन,
शाम को तू सीने में चुभने लगता है।

He watches over every throb, every breath
A spy in my heart keeps shadowing me

It's the innocent who is often sacrificed
He tells me so, citing history

Your absence does not bother me all day long
As the sun sets, you stab through my chest

20

सहमा-सहमा सा हूँ रोया-रोया हुआ,
जैसे बच्चा हो, मेले में खोया हुआ।

सूखने दी न पलकें तेरी राह में,
हमने आँखों को रक्खा भिगोया हुआ।

उसके गालों पे गिरते हैं आँसू मेरे,
फिर भी जगता नहीं है वो सोया हुआ।

दिल की गहराईयों में छुपे राज़ सा,
कोई हमको भी रखता संजोया हुआ।

Fearful is the heart, weepy and tearful
Like a child lost in a fair

Haven't let my eyes dry waiting for you
I have kept them drenched

On his cheeks fall my tears
Yet he does not wake up

If only someone would nurture me
Like a secret hidden in the depths of the heart

21

रात भर Net पे दिल को थामे हुए,
अपने in-box का चेहरा तकता रहा,
एक email आने की उम्मीद में,
जुगनुओं की तरह जलता-बुझता रहा।

धूप निकली मगर फीकी-फीकी लगी,
जैसे कल phone पे तेरी आवाज़ थी,
सर्दी इतनी नहीं थी, मगर फिर भी इक
कपकँपी सी रही मैं सिहरता रहा।

Holding my heart in my mouth, gazing at the inbox, I sat all night
Waiting for an email, hope flickering like fireflies all night

The sun emerged feeble, like your voice on the phone yesterday
It wasn't too cold, yet a shiver took hold of me, kept me aquiver

22

सुब्ह टूटी हुई, शाम बिखरी हुई,
रात नम काई-काई सी सीलन भरी।

एक ख़रगोश ज़ख़्मी उठा लाए हम,
घर में आकर बहुत मार खानी पड़ी।

कुछ दिनों में ये जामुन भी पक जायेंगें,
तोड़ने घर से निकलेंगें बच्चे सभी।

उसके शिकवों का दिल पर असर कुछ न था,
ख़ामुशी उसकी सीने में आकर चुभी।

The morning lies tattered, evening scattered
And the night humid, filled with mossy dampness

I brought home a wounded rabbit
For this I suffered a lot of beating

In a few days these jamun will ripen
Children will emerge from their homes to pick them

Her complaints did not touch my heart
Her silence pierced through my chest

23

गीली पलकों के पास हैं आँखें,
थोड़ी धुँधली उदास हैं आँखें।

हल्की सर्दी है ख़्वाब पहना दो,
शाम से बेलिबास हैं आँखें।

कब की सीलीं हैं सूख जाएंगी,
तेरे होठों के पास हैं आँखें।

Close to wet eyelids are these eyes
The sadness a blur in these eyes

It's cold, drape a dream over them
Naked since dusk are these eyes

Moist for so long, they will dry
Close to your lips are these eyes

24

बीन बजती साँस की दिल के तले,
दर्द के सब साँप सीने में पले।

उम्र भर आँखों में लेकर इक धुँआ,
गीली लकड़ी की तरह हम-तुम जले।

बारिशें बाहर बरसतीं हैं यहाँ,
सीने की चट्टान फिर कैसे गले।

The breath plays a flute in the heart
Serpents of pain dance on the chest

Carrying smoke in the eyes all life
You and I have burned like damp wood

It keeps pouring outside
How can the rock in the heart soften?

25

बड़ी मुद्दत हुई आओ न इक दिन शब उधेड़ेंगें,
नए शिकवे निकालेगें पुराने ग़म कुरेदेंगें।

मुझे जीते जी दफ़्ना के कहाँ ये रूकने वाले हैं,
मेरा जो नाम बाक़ी है, वो मिट्टी में मिलायेंगें।

अभी सब चुप हैं, मैं इनके सरों पे धूप रक्खे हूँ,
ज़रा दिन ढलने दो मुझको ये पानी में डुबायेंगें।

25

It's been long, let's rip off the night one day
Create new grievances, excavate old ones

They will not stop even after burying me alive
Only after wiping my name off will they rest

They are all silent now, I am the sun over their heads
Let the day wane, they will drown me in water

Nazms
नज़्में

1

मैं

मैं ही था वो मैं ही हूँ...

दरिया हूँ दरख़्त भी
अर्श भी हूँ फ़र्श भी

दैर हूँ हरम भी हूँ
सुन्नी हूँ शिया भी हूँ

पण्डितों के हाथ में
आरती के दीप सा

क़ाज़ियों के माथे पे
सजदे का निशान हूँ

पादरी के सीने पे
झूलती सलीब हूँ

मैं ही था वो मैं ही हूँ

1

I

I was the one, I am the one…

River am I, also a tree
Sky I am, the earth too

Temple am I, also a harem
Shia I am, Sunni too

In the hands of the pandits
Like a diya for a prayer

On the forehead of a Qazi
A mark of obeisance

On the chest of the pastor
a swinging cross

I was the one, I am the one

2

Hullabaloo

बचपन में स्कूल की जब
बिन कारण छुट्टी हो तो
मारे ख़ुशी के बच्चो में
कितना हल्ला होता है

बिल्कुल वैसा शोर-ओ-गुल
मेरे अंदर होता है
जब मिलते हो अचानक तुम
आते जाते रस्तों पर

Hullabaloo

When for no reason
A holiday is declared at school
Jubilant are the children
What a din they create

That same hullabaloo
rises within me
When out of the blue on some road
I run into you

3

बासी

दिल जैसे सरकारी दफ़्तर हो कोई
ढेर लगा है मोटी मोटी files का
जिनसे बासी वक़्त की बदबू आती है

भूले बिसरे ग़म हैं इनमें
दीमक खाए ताने हैं
शिकवे दर्ज हैं बड़े पुराने लम्हों के

कल तुमने जिस तौर से मुझको देखा था
आज भी तुम इक फ़िक़रा कसकर हँसते हो
ये भी कल इक file बनकर आयेगा

इस दफ़्तर का मैं ही एक मुलाज़िम हूँ
रोज़ कई files का ब्यौरा करता हूँ
ढेर मगर ये फिर भी बढ़ता जाता है

अब तो service के भी दिन गिनती के हैं
कब होगी तफ़्तीश मुकम्मल क्या जाने
कब तेरी file की बारी आयेगी

Stale

My heart is like some government office
Files upon files lie here in a heap
Stinking of time gone stale

In them lie forgotten old woes
Termite-eaten taunts
And complaints of times gone by

The look you gave me yesterday
And the way you laughed at me, jeering
These too will come back in a file tomorrow

In this office, I'm the only employee
Clearing several files each day
Yet the heap keeps growing

My days of service are numbered now
Who knows when the probe will be complete
Who knows when your file will turn up

4

फिक्ऱ

तेरे जाने के बाद फिक्ऱमंद हैं सारे...

ये सारी वादियाँ जो girlfriends हैं मेरी
बड़ी बातूनी हैं उलझाए हुए रखती हैं

यार बचपन का आसमाँ भी तो कई दिन से
न झगड़ता है न किसी बात पे अकड़ता है

कितना गंभीर पहले रहता था बूढ़ा सागर
हँसाना चाहे अब घिसे-पिटे लतीफ़ों से

हुआ कमाल की वो परकटी घमण्डी नदी
नज़र चुराती थी पहले, अब flirt करती है

छोटी पगडण्डियाँ हवाऐं, झरनें और कोहरा
हमेशा साथ बदन से चिपट के चलते हैं

वक़्त मिलता नहीं कि तेरे बारे में सोचूँ
और बहुत देर, बहुत देर तक उदास रहूँ

तेरे जाने के बाद फिक्ऱमंद हैं सारे

Concern

They are all anxious after your departure…

These valleys, girlfriends of mine
Garrulous, they keep me occupied with a constant chatter

For days now, the sky too, my childhood yaar
Neither quarrels nor argues with me

How sombre the old ocean once,
Now tries to make me laugh with stale jokes

What a wonder! That snooty river – a tomboy
Avoiding me earlier, now flirts with me

Pathways, the breeze, springs and fog
Walk clinging to my body

I have neither the time to think about you
Nor to wallow in sadness for long

They are all anxious after your departure

5

Cold

आँखे तेरा नाम खाँसा करती हैं
पलकों से छीकें भी मारा करती हैं

बंद कानों में टपकता रहता है
एक मध्धम सुर तेरी आवाज़ का
तेरी ख़ुशबू बह रही है नाक से

लग गई मुझको तू सर्दी की तरह
जम गई सीने में जाड़े की तरह

Cold

Eyes cough your name
Sneezing it out through the eyelids

Dripping into my jammed ears
That melodious note of your voice
Your scent emanates from the nose

You have caught hold of me like a cold
Lodged yourself in my chest like a chill

6

मिर्ज़ा

पुल पे ग़ालिब पत्थर लेकर बैठे हैं...

मैंने तो बस यूँ ही बोल दिया था कि
वो लड़की जिसने मुझको हैरान किया
उसका घर उस गली के मोड़ पे है जिसका
नाम आपके नाम से ही है वाबस्ता

हमदर्दी से सुनाए कुछ अशआर मुझे
अपने ग़ालिब होने का फ़र्ज़ अदा किया
शाम ढली और कुछ बूँदों के बाद मुझे
अपने टूटू-फूटे से कुछ शेर उन्हें
कह देने की थोड़ी सी हिम्मत आई

सुनकर थोड़े दुखी हुए चुप से बैठ गए
फिर बोले कि तुम्हारी कोई ख़ता नहीं
कौन है वो कमबख़्त कहाँ पे रहती है
जिसने तुम से अच्छे ख़ासे आदम को
ऐसी शाइरी करने पर मजबूर किया
उसको सारी बम्बई की सड़कों में
मिर्ज़ा ग़ालिब रोड मिली थी रहने को?

मैंने उनको अदब से टोका और कहा
मुआफ़ करें सरकार ने उसको रोड नहीं
मिर्ज़ा ग़ालिब मार्ग का उन्वान दिया है

पत्थर लेकर मेरे पीछे भागे ग़ालिब
मैं तो जैसे-तैसे बच आया लेकिन
तबसे तुम्हारे इंतज़ार में ही मिर्ज़ा
पुल पे भारी पत्थर लेकर बैठे हैं

Mirza

Ghalib sits on the bridge, stone in hand…

I told him in passing
About the girl who's so troublesome
Living in a house at the turn of the lane
Named after you

Ghalib, reciting his verses kindly,
Lived up to his name

With the sun setting and a little drink
I gathered some courage to read out
A few raw couplets of mine

Troubled he was and sat somewhat silent
Not your fault at all, he said
Who is she, where does the cursed one live
One who has compelled a perfectly worthy self
Like you to write such worthless poetry
Of all the roads in Bombay,
Could she find only Mirza Ghalib Road to live?

Interrupting him politely, I said
Excuse me, the government calls it
Mirza Ghalib Marg, not 'Road'

Stone in hand, Ghalib came after me
Somehow I managed to run and save myself
But since then Mirza sits waiting for you

On the bridge, with a heavy stone in his hand

7

हमदमी

खेल चला कुश्ती का शब भर आँगन में
और फिर भी न जीता न हारा कोई

दोनों लड़ाकू पहलवान गुत्थमगुत्था
दाँव-पेंच में माहिर शातिर लगते थे

धोबीपाट से मुँह के बल जो गिरता इक
दूजा टाँग पछाड़ का पेंच लगा देता

रोते थे, चुप होते थे चिल्लाते थे
माज़ी कभी जलाते, कभी बुझाते थे

पौ फटने को थी और अब उन दोनों को
अपनी अपनी दुनियाँओं में जाना था
करवट लेकर बिस्तर पर बेहो.श गिरे

काफ़ी वक़्त के शादीशुदा जोड़ों में
कितनी क़रीबी हमदमी दुश्मनी होती है

Intimacy

All night in the courtyard, the wrestling match went on
Nobody won, or lost

Both wrestlers, tussling and scuffling,
Seemed experts at crafting wily moves

One fell on his face with a monkey flip
The other laid a trap with a cobra-clutch leg-sweep

They wept, went silent and shouted
Igniting the past, at times dousing it

Dawn was about to break
They had to return to their own lives
Turning over on the bed, lifeless they fell

For couples married long
How intimate is the enmity

8

सूनी चाय

दोपहरी की गहरी नींद के बाद अक्सर
इक गहरी चुप सी अंदर लग जाती है
यादें पुरानी ज़िन्दा होने लगती हैं

शाम की सूनी चाय के गरम प्याले को
हथेलियों में पकड़ के गरमाते रहना
धुँधलके में देखना आती उदास रात

Bedroom की ceiling पे घुनघुन करती
Tube light की मातमी रौशनी के नीचे
कीड़े के तआक़्कुब में चिपकी एक छिपकली

अंगीठी पे सिकती रोटी में जलते
आटे की ख़ुशबू जो याद आ जाए तो
आँख धुँए से अब भी जलने लगती है

छिड़काव से ठण्डी छत पे, रात को रेडियो में
पुराना नग़्मा सुनके आँख का भर जाना
धुँधले चाँद में शक्ल तलाशना फिर शब भर

पौ फटने पर औंधे होकर तकिए में
नुक्कड़ के मंदिर की आरती में बजते
मंजीरों की आवाज़ों पे सो जाना

दोपहरी की गहरी नींद के बाद अक्सर
इक गहरी चुप सी अंदर लग जाती है
यादें पुरानी ज़िन्दा होने लगती हैं

Lonesome Tea

Often after a deep sleep in the afternoon
A bottomless silence settles inside
Old memories begin to come alive

The lonesome cup of hot evening tea
Warming the palms
As I watch the sad night approach through the dusk

On the ceiling of the bedroom
Under the gloomy brightness of the droning
  tube light
A lizard waits in anticipation of an insect

Eyes smart with the smoke even today
Recalling the scent of the burning flour
As the roti puffs up on the fire

At night, on the roof cooled by sprinkling water
Eyes well up listening to an old song on the radio
And looking for a face in the hazy moon all night

Falling asleep at the break of dawn, face buried in the pillow,
To the sound of manjiras ringing with prayers
That echo from the temple down the lane

Often after a deep sleep in the afternoon
A bottomless silence settles inside
Old memories begin to come alive

9

ज़ुड़वाँ चश्मे

कभी हैं रूई से हल्के आँसू
कभी पहाड़ों जैसे भारी
सूखे कुऐं सी इन आँखों में
काई जैसे चिपके आँसू

रात में अक्सर लैम्पोस्ट के
चारों ओर बरसती बारिश
जैसे उन पलकों के पीछे
छलके-छलके ठहरे आँसू

दो ज़ुड़वाँ चश्मे हैं आँखें
जिनके चलते-रूकते धारे
जंगल की पगडण्डी जैसे
गालों पे ये सूखे आँसू

कीलों से ठोके रक्खे हैं
कुछ मंज़र रेटीना में
धीमे-धीमे अँगारे से
पुतली में दहके आँसू

Twin Springs

Lighter than cotton are these tears
At times heavy as mountains
Like moss on parched wells
They stick to the eyes

At night, often around the lamp post
Rain comes pouring down
Like tears welling up, waiting
To spill from behind the eyelids

Two eyes, twin springs
Stopping and sprinting
Like pathways in the jungle
These dry tears on the cheeks

Hammered with nails
Are images in the retina
Like gentle ambers
Tears aflame in the pupil

10

Unwanted

बड़ी शर्मिन्दगी उठाई मैंने साहिल पे...

सीपियाँ सारी नाक मुँह फुलाए बैठी थीं
रेत भी ख़ूब गर्म हो रही थी ग़ुस्से में

पाँव रक्खा था समन्दर में मैंने जैसे ही
चिढ़चिढ़े पानियों ने च्यूँट लिया तलुओं में

नाव ने कितना डराया हिला हिला के मुझे
उसका बस चलता तो उतार देती रस्ते में

वो नन्हीं मछलियाँ भी हैरत से तकती रहीं
तहों से चिपके रहे ग़मज़दा दुखी corals

वो सभी मुन्तज़िर थे, बस तुझी से मिलने को
मैं बिन बुलाया सा मेहमान था वहाँ तुझ बिन
ऐक बैरंग सी चिट्ठी का लिफ़ाफ़ा जैसे

बड़ी शर्मिन्दगी उठाई मैंने साहिल पे

Unwanted

How embarrassing it was on that shore

Seashells sat sulking
And the sands blazed in anger

Just as I put my feet into the sea
Agitated waters pinched my soles

What a scare the shaking boat gave me
If it had its way, it would have thrown me off

Those tiny fish kept staring in wonder
Stuck to their depths, the sad woeful corals

All were impatient to meet you
I was an uninvited guest without you
Like the unstamped envelope of a letter

How embarrassing it was on that shore

11

मिन्नत

सामने Jesus के तुमसे जब church में मैंने पूछा था
पहले तो ignore किया, फिर हँस कर तुमने टाल दिया

जब दरगाह पे बूढ़े पीर की हाज़री में दोहराया तो
तुमने चौड़ी-चौड़ी आँखें चौड़ाईं और धमकाया

जलसों में, बाज़ारों में, तनहाई में, ख़ामोशी से
कितनी मिन्नत, कितनी दफ़ा की थी कि शादी कर भी लो

अब न जाने तुम मुझसे किस बात पे रूठ के बैठी हो
जो कुछ भी मसला है तुमको वापस आना ही होगा

क़ानूनन बिन शादी के, नहीं मिल सकता है तलाक़

11

Pleading

In the church, in front of Jesus, when I proposed to you,
You ignored me first, and then you laughed and let it pass

In the dargah I proposed again, in the presence of the old pir,
Your wide eyes glaring wider, you threatened

In gatherings, in markets, in solitude, in silence
How I pleaded, how many times I asked you to marry me

I know not what it is that has annoyed you so
You have got to come back whatever the issue

A divorce without marriage is legally impossible

12

घुटन

जिस्मों के ट्रेफिक जाम में फँसी हुई है मेरी रूह
आँख जहाँ तक उठती है, रेंगते हैं अनगिनत बदन

कोई दूसरा रस्ता या कोई गली मिल जाए तो
घूम-घाम के वो भी फिर इसी जाम में अटकती है

जाने कब ये जाम खुलेगा, कब आयेगा तेरा घर
अब तो अपने जिस्म के अंदर घुटने लगा है मेरा दम

Suffocation

My soul is trapped in the traffic jam of bodies
Countless figures wriggle as far as the eye goes

On discovering another route, a bypass
I meander around and find myself back in the jam

Who knows when this jam will clear, when I'll reach your home
I suffocate within my own body now

13

बीज

डबडबाई आँख में भींच के पकड़ रखे
दहके आँसू खींच के निगलिए और बताईए

इस तरह से पहले भी दिल कभी जला था क्या?
यूँ कभी घुटी थी क्या आपके गले में चीख़?
गर्म राख को बदन पे यूँ कभी मला था क्या?

जलते रहना है तो आँसुओं के बीज बोईए
सब्ज़-सब्ज़ दिखते रहना है तो उल्टा रोईए

13

Seeds

Eyes brimming over, hold seething tears
Pull them back, swallow them and tell us

Was your heart aflame this way ever before?
Was your scream ever stifled in your throat like this?
Have you ever rubbed hot ash this way on your body?

Sow your tears if you want to keep burning
To look fresh and young, let your tears fall inwards

14

मुसलसल

सूरज के उगने से, चाँद के छुपने तक
एक मुसलसल भाग दौड़ सी रहती है

हरदम ऐसा लगता है कि शायद मैं
भूल रहा हूँ कुछ या फिर कुछ भूल गया

बिना वज्ह भी जब तुम चुप हो जाती हो
तो मुझको लगता है कि नाराज़ हो तुम

मैं नीदों में भागा भागा रहता हूँ
या कह लो के भागते भागते सोता हूँ

सूरज के उगने से, चाँद के छुपने तक
एक मुसलसल भाग दौड़ सी रहती है

Endless

From sunrise to the vanishing of the moon
An endless running around

Each moment it feels as if
I am forgetting or have forgotten something

If you fall silent even for no reason
I feel I have upset you

In my sleep, I keep running
Or perhaps I sleep while running

From sunrise to the vanishing of the moon
An endless running around

15

Home Alone

अकेला छोड़ के न जाया करो मुझे घर में...

On होता नहीं है TV तुम न देखो तो
और ताला भी कहाँ ख़ुलता है अलमारी का

तुम्हारे जाते ही नल को ज़ुकाम होता है
टपकने लगता है 'टप-टप' ये बत्तमीज़ मुआ

बत्तियाँ बुझी बुझी सी रहती हैं
AC भी गर्म हवा फेंकता है

जाम हो जाता है Internet बेवज्ह
तुम्हारे आने पे बेवज्ह चलने लगता है

हवा से मिलके परदे रात भर डराते हैं
मेरे ख़िलाफ़ कई साज़िशें सी होती हैं

अकेला छोड़ के न जाया करो मुझे घर में

Home Alone

Don't go away leaving me alone at home

With you not there, the TV refuses to come alive
And the lock of the cupboard does not open

The tap catches a cold the moment you go
Drip-drip it goes dripping, the cheeky fellow

The lights play hide-and-seek
The air conditioner spews hot air

For no reason does the Internet hang up
Without a reason it connects again when you return

The breeze and the curtains join hands to frighten me
Hatching conspiracies against me all night

Don't go away leaving me alone at home

16

मशीन

अधकच्चे ज़ख़्मों से ज़िस्म सजाकर मैं
सर्द हवा से दिन भर छिलता रहता हूँ

शाम को बेहोशी का आलम होता है
आँधियारों में आँखें फ़ाड़े रहता हूँ

रात को सन्नाटा यूँ चुभता है जैसे
फ़र्श पे लोहे की कुर्सी खींचे कोई

आँख झपकने से पहले ही ज़र्द सुबह
रोज़ वही दिन लेकर फिर आ जाती है

इस दुनिया की बंद पुरानी factory में
ज़ंग लगी सी इक बीमार मशीन हूँ मैं

Machine

Adorning my body with raw wounds
All day the cold winds peel me off

In the evening, I am in a stupor
I peer through the darkness, eyes wide open

At night, the silence pricks me like
An iron chair being dragged on the floor

Before the eye closes, the pale morning
Brings home the same old day again

In the locked old factory of this world
I am a somewhat rusted sick machine

17

Human Rights

ज़ुल्म कहीं भी जब हद से ऊपर बढ़ने लग जाता है
तो फिर Human Rights Commission वाले
    वहाँ पे आते हैं

मज़लूमों के ज़ख़्मों पे फाए रखते हैं धीमे से
हौले-हौले, फूँक-फूँक के गीली आँख सुखाते हैं

Human Rights Commission वाले
    हवाओं पे कानों को रख के
दूर दराज़ की सारी फुग़ाऐं सब चीख़ें सुन लेते हैं

सुना है वो हक़ दिलवाते हैं और करवाते हैं इन्साफ़
मेरी आहें भी तो उन तक पहुँचेगी इक रोज़ कभी

अब भी वक़्त है वापस आ जाओ वरना फँस जाओगी

17

Human Rights

Wherever tyranny begins to cross the limit
The Human Rights Commission comes into play

Gently tending to the wounds of the victims
Tenderly drying their wet eyes

Its ear to the ground, the Human Rights Commission
Hears the bellowing and screaming from afar

I hear they fight for your rights, they get you justice
One day my wails too will reach them

There's still time; come back or else they will come for you

18

Reunion

जिस्म जला लकड़ी पे उसका
नाम ज़बाँ में दफ़्न हुआ
चेहरा बुझकर ख़ाक हुआ
बाज़ू-टाँगे राख हुईं

लम्बा चौड़ा भाई मेरा
अब कपड़े की छोटी सी
थैली में भर आया था
जिसे नदी में उँडेल दिया

उसी नदी के घाट किनारे
बैठ के सोचता हूँ अक्सर
इक दिन इसमें बहकर मैं
उससे मिलने जाऊँगा

Reunion

His body burned on the logs
His name buried in the tongue
The face blazed into embers
Limbs turned into ashes

That tall stout brother of mine
Now fitting into a
Tiny little cloth bag
Was immersed into the river

On the banks of that river
I often sit and ponder
One day I too will flow in it
And get to meet him

19

सर्दी

फिर से लिक्खेंगें कोहरे के काग़ज़ पे हम
गर्म सड़कों की तपती हुई दास्ताँ
सेकना है यूँ सर्दी के गालों को फिर
नोंच कर ज़र्द मैदाँ की सूखी तपिश

Winter

Once again will we write on the sheet of fog
The sizzling saga of scorching roads
Thus will we warm the cheeks of winter
Plucking the arid heat of the blanched land

20

तूफ़ान

एक आँधी थी आँगन उड़ा ले गई
मेरा घर-बार उस रोज़ सड़कों पे था
बूढ़ा बरगद उखड़ के ज़मीं पे गिरा
और जड़ें उसकी आकाश छूने लगीं

Tempest

A storm blew the courtyard away
My home and hearth lay on the roads that day
Uprooted, the old banyan tree fell to the ground
Its roots reaching for the skies above

21

अचानक

नर्म हल्का हरा शॉल ओढ़े हुए
जैसे ही वो बदन मेरी जानिब बढ़ा
उन मरासिम की आँखो में शम्एें जलीं
दफ़्न मिल कर किया था जिन्हें बर्फ़ में

Suddenly

Wrapped in a soft light-green shawl
As she moved towards me
Eyes lit up with the glow of the ties
We had buried in the snow together

22

निशान

मेरी हर साँस में बढ़ रही है चुभन
बर्फ रातें हैं ख़ामोश होठों पे और
लाल सा जो निशाँ पीठ पर था तेरी
अब चमकने लगा वो भी ख़ुर्शीद सा

Mark

Every breath I take hurts
On silent lips rest snow-laden nights
That reddish mark on your back
Now gleams somewhat like the sun

23

A Date

मैं शब भर नींद में जागूँगा
तुम आना दबे दबे पाँव
पलकों पे ऐड़ी रखकर
ख़्वाब में दाख़िल हो जाना

23

A Date

All night I will sleep fully awake
You must come tiptoeing
Place your heels on my eyelids
And enter my dreams

24

भाई

(गुलज़ार साहब)

उसकी तनहाई न टूटे ज़रा ख़याल रहे...

वो एक हल्की मख़मली रूई के बादल सा
निगल के तीखी धूप छाँव बाँटा करता है

क़रीब जाओ तो जाना घिसट के घुटनों पे
बिखर न जाए वो पैरों की चाप से वरना

ज़बाँ पे तोल के ले जाना अपनी आवाज़ें
हर एक लफ़्ज़ नाप लेना अपने होठों का

वो Santa Claus सा सच्चा सफ़ेद सूफ़ी है
उसकी तनहाई न टूटे ज़रा ख़याल रहे

Bhai

(Gulzar Saab)

Careful, lest you shatter his solitude

He is like a cloud of light velvety wool
Swallowing the harsh sun to provide shade to others

Drag yourself on your knees to him
Lest he comes apart at the sound of your feet

Weigh your speech on your tongue
Measure every word on your lips

Like Santa Claus he's a true white Sufi
Careful, lest you shatter his solitude

25

ओशो

एक ही बात बस वो कहते हैं
तुम नहीं होगे तो मिलूँगा तुम्हें

बंद आँखों से देखना सीखो
मेरे कानों में रोज़ कहते हैं
एक दुनिया तुम्हारे भीतर है
अनगिनत लोग जिसमें रहते हैं

और ये लोग रात दिन सारे
इक मुसलसल जिरह में हों जैसे
इस क़दर शोर होता है तुम में
बात अपनी सुनाऊँ तो कैसे

गुफ़्तगू ख़ुद से करना बंद करो
अपने इस शोर के गवाह बनो
ख़ुद तलक ही पहुँचना है तुमको
तुम ही मंज़िल हो तुम ही राह बनो

और मंज़िल पे भी ठहरना मत
उसके आगे भी तुमको जाना है
जो बचा हो वो फूंकना होगा
कुछ न रह जाए सब गँवाना है

ख़ुद में बाक़ी न जब रहोगे तुम

उन ख़लाओं में, मैं दिखूँगा तुम्हें
एक ही बात ओशो कहते हैं
तुम नहीं होगे तो मिलूँगा तुम्हें

25

Osho

He says but one thing all the time
I will meet you when you are not there

Learn to see with your eyes closed
He whispers into my ears every day
A whole world lies within you
And millions thrive in it

All these people, day and night
Seem to wrangle endlessly
Too loud is the cacophony in you
How do I tell you anything?

Stop conversing with yourself
Become a witness to the noise within
You have to reach your own self
You are your own goal, be the path too

And halt not when you reach the goal
You have to go way beyond it
Whatever is left has to be annihilated
Allow everything to be lost

When you are no longer to be found in yourself
In that emptiness you will find me
Only one thing does Osho say
I shall meet you when you are not there

Acknowledgements

There have been a few people who have been indispensable in creating this collection:

Sukrita Paul Kumar, my translator, who went above and beyond her role in this book. She not only translated my work beautifully but was always eager to find expressions close to the original and, sometimes, her creativity and imagination even helped contribute and improve my original work in Hindi.

My publisher, Shantanu, for his invaluable editorial comments which contributed immensely to the work.

Ankur Gupta, my childhood friend, for always encouraging me to write and dream and for giving me my first diary in 1984 to write poems in, which I continue to use even today.

Pankaj Aggarwal of Hapur Sweets, Mussoorie, for introducing me to Amber Kharbanda Saahib.

Rahul Nanda, for designing the stunning cover.

And lastly, Rahat Aapa (Dr Rahat Bashir Badr) for always being there like a pillar of strength and support.

About the Book

All of us know Vishal Bhardwaj as a film-maker whose films have consistently pushed the envelope and as a composer who has churned out some of the biggest chart-toppers in recent years. Here's presenting him in a new avatar: a poet. Over the course of the twenty-five ghazals and an equal number of nazms in this book, Vishal comes across as a poet with a distinctive voice and a style all his own.

Whether it is a romantic ode pulsating with an intense passion or yearning, or a bitter, ironic comment on the state of the nation, a gentle sense of wonder, an undeniable rhythm and a subtle intrigue pull one into the poems in *Nude*, both in the original Hindustani alongside their English translation by Sukrita Paul Kumar.

Unusual imagery, an evocative style and an idiom that is contemporary, yet reminiscent of the old-world charm of the Hindi and Urdu poetic traditions, each poem is wrapped in mystique. The Internet and Mirza Ghalib on the roads of Mumbai happily coexist in these poems, offering an insight into how contradictions can be reconciled simply and ingeniously.

About the Author

Vishal Bhardwaj is a film-maker, writer, composer and producer. He has directed nine feature films, produced five and composed music for more than forty. His directorial work, which has won him three international awards and seven national film awards, includes *Makdee, The Blue Umbrella, Kaminey, 7 Khoon Maaf, Matru Ki Bijli Ka Mandola, Rangoon,* as well as the internationally acclaimed Shakespearian trilogy: *Maqbool, Omkara* and *Haider* (adapted from *Macbeth, Othello* and *Hamlet,* respectively). He has recently begun his stage career by directing *A Flowering Tree* by John Adams in the Théâtre du Châtelet, Paris, and composing music for *Monsoon Wedding: The Musical* in Berkeley, California.

Born and brought up in Kenya, Sukrita Paul Kumar is a well-known poet, critic and translator. She is an honorary fellow of the International Writing Programme, University of Iowa (USA), as also of the Hong Kong Baptist University and Cambridge Seminars. She is honorary faculty at the Durrell Centre at Corfu (Greece). She has published many collections of poems, volumes of critical writing and translations. Her books include *Without Margins, Poems Come Home, Blind, Narrating Partition, Mapping Memories* and many others. Sukrita has also held solo exhibitions of her paintings.

HarperCollinsPublishersIndia

Subscribe to Harper Broadcast

Harper Broadcast is an award-winning publisher-hosted news and views platform curated by the editors at HarperCollins India. Watch interviews with celebrated authors, read book reviews and exclusive extracts, unlock plot trailers and discover new book recommendations on www.harperbroadcast.com.

Sign up for Harper Broadcast's monthly e-newsletter for free and follow us on our social media channels listed below.

Visit this link to subscribe: https://harpercollins.co.in/newsletter/

Follow us on

YouTube Harper Broadcast

Twitter @harperbroadcast

www.harperbroadcast.com

Follow HarperCollins Publishers India on

Twitter @HarperCollinsIN

Instagram @HarperCollinsIN

Facebook @HarperCollinsIN

LinkedIN HarperCollins Publishers India

www.harpercollins.co.in

Address

HarperCollins Publishers India Pvt. Ltd
A-75, Sector 57, Noida, UP 201301, India

Phone: +91-120-4044800

TALK TO US

Join the conversation on Twitter
http://twitter.com/HarperCollinsIN

Like us on Facebook to find and share posts about our books with your friends
http://www.facebook.com/HarperCollinsIndia

Follow our photo stories on Instagram
http://instagram.com/harpercollinsindia/

Get fun pictures, quotes and more about our books on Tumblr
http://www.tumblr.com/blog/harpercollinsindia

First published in hardback in India in 2018 by
HarperCollins *Publishers* India

Copyright for the original in Hindustani © Vishal Bhardwaj 2018
English translation copyright © Sukrita Paul Kumar 2018

P-ISBN: 978-93-5277-609-2
Epub Edition © January 2018 E-ISBN: 978-93-5277-610-8

2 4 6 8 10 9 7 5 3

Vishal Bhardwaj asserts the moral right to be identified as the author of this work.

All rights reserved under The Copyright Act, 1957. By payment of the required fees, you have been granted the nonexclusive, nontransferable right to access and read the text of this ebook on-screen. No part of this text may be reproduced, transmitted, downloaded, decompiled, reverse-engineered, or stored in or introduced into any information storage and retrieval system, in any form or by any means, whether electronic or mechanical, now known or hereinafter invented, without the express written permission of HarperCollins *Publishers* India.

Cover design: **Rahul Nanda**
Cover photograph: **Gundi Vigfusson**

www.harpercollins.co.in

HarperCollins *Publishers*
A-75, Sector 57, Noida, Uttar Pradesh 201301, India
1 London Bridge Street, London, SE1 9GF, United Kingdom
2 Bloor Street East, Toronto, Ontario M4W 1A8, Canada
Lvl 13, 201 Elizabeth Street (PO Box A565, NSW, 1235), Sydney NSW 2000, Australia
195 Broadway, New York, NY 10007, USA